नयी सदी में हिंदी भाषा और साहित्य: स्थिति और गति

संपादक

डॉ. नारायण

नयी सदी में हिंदी भाषा और साहत्यि : स्थिति और गति

मूल्य : रू. 500/-

Copies : 500

प्रथम संस्करण : मार्च 2019

ISBN : 978-1080493166

Published by :

Nischal Publications
H.No.3,65/12, Ekasheela Nagar,
Nizamabad - 503003
Telangana
Cell : 9542209764

DTP & Print :
Srivari Graphics, Tirupati
Andhra Pradesh.
Cell : 9948434277

नयी सदी में हिंदी भाषा और साहित्य : गोरा बंजारा संदर्भ

ए. बाबू

भाषाओं की रचना शिक्षित लोगों के द्वारा ही नहीं बल्कि अनपढ लोगों के द्वारा भी होती है। उस में गोर बांजारा लोग भी शामिल है। गोर बंजारा बोली की स्वतंत्र लिपि नहीं है। लिपि का होना आवश्यक है। उस की खोज करनी चाहिए। सिंधुकालीन प्राप्त प्रतीक और संकेतों के आधार पर उसे बनाने की जरूरत है। क्यों कि भारत की प्राचीन जन जातियों में से बंजारा एक प्रमुख जाति है। भारत के बीस से भी अधिक प्रदेशों एवं प्रांतों में यह भाषा बोली जाती है। बंजारा कुछ प्रदेशों में सतरा के नाम से भी जानी जाती है। जिन की जनसंख्या लगभग ६ करोड से भी अधिक हो सकती है। देश की एक मात्र बंजारा जमात है। जिस की बोली वेशभूषा, गोत्र एक जैसी है।

भाषा की दृष्टि से देखा जाये तो भारोपीय भाषा परिवार के लोग मुख्यतया इस भाषा को बोलते थे। बंजारा बोली मूलतः भारतीय परिवार की बोली है। भारत देश के विभिन्न प्रांत के बंजारे अपनी एक ही बोली में अपने जाति के भाइयों से बोल सकते हैं। जिसे गोर बोली कहते हैं तथा वर्ण उच्चारण भारोपीय भाषा परिवार की भाषाओं के समान है।

बंजारा भाषा :

डॉ. अब्रहम ग्रियर्सन ने अपने भाषा सर्वेक्षण पुस्तक में पहली बार बंजारा, लंबाडा बोली का उल्लेख किया है। " स्वतंत्र भारत जातीय तथा भाषाई समस्या' बोरीस क्लूयेन अनु. नरेश बेदी (पृ:५९) उत्तर दक्षिण भारत में बोली जानेवाली बंजारा लंबाडी बोली जन संख्या ९२७२०९३ मानी है। डॉ. ग्रियर्सन के बाद डॉ. गणेश देवी भाषा संरक्षण कर रहे हैं। जिस से भारत की जीवित बोलियों की नयी संख्या सामने आ सकती है। किसी भी बोली का अध्ययन करने के लिए एक तो भूगोल तथा मानव वंश का ज्ञान होना चाहिए। बंजारा भाषा की प्रकृति जलवायु के आधार तथा संस्कृति के अध्यापन से पता चलता है कि बंजारों का मूल स्थान गोर स्थान, गोरबंद नदी तथा गोर पहाडियाँ याने सिंधु घाटी सभ्यता का भूभाग रहा है। रक्त नाक कपोल और अस्थिमापन से यह निष्कर्ष निकलता है कि बंजारा गोर पंथी प्रायः आर्य जाति के लोग थे। बंजारा भाषा मूल रूप ध्वनि विज्ञान, स्वरों का वर्गीकरण, रूप विज्ञान, अर्थ विज्ञान, पारिवारिक वर्गीकरण आदि को देख सकते हैं। तो बंजारा भाषा आर्य भाषा तथा मूल भारोपीय भाषा परिवार की भाषा है। तात्पर्य यह है कि बंजारा जमात कहीं शताब्दियों के पहले अपने भूभाग में बसी है। जिसल के कारण उन की अपनी कबीले के अंतर्गत व्यवहार बोलचाल के लिए जिस बोली का निर्माण हुआ था, वह बंजारा भाषा है। भाषा वैज्ञानिक मानते हैं कि, दुनिया में सात हजार भाषाएँ जीवित हैं।

आज भारत में २२भाषाओं को ही मान्यता मिली है। २००१ की जनगणना के अनुसार ९२२ भाषाएँ भारत में प्रचलित हैं। इस के अतिरिक्त मातृ भाषाओं की संख्या ९३५२ मानी जाती है।

बंजारा भाषा : रूप रचना :

बंजारा भाषा पर भाषा वैज्ञानिक तथा भाषा शास्त्र से संबंधित बहुत कम ही हुए हैं। जो नहीं के बराबर है। बंजारा लोक साहित्य पर अनुसंधानपरक अध्ययन आज हो रहा है। किंतु भाषा वैज्ञानिक शोध कार्य नहीं हुआ है। डॉ. नेमीचंद्र जैन ने भील का भाषा शास्त्रीय अध्ययन जिस लगन से किया है वह एक आदर्श भारतीय भाषा का अध्ययन माना जा सकता है। बंजारा लिपि नहीं है। तो भी आज छः करोड के आसपास बंजारों के कंठों में वह सुरक्षित है। यानी भारत में बंजारा भाषा या बोली बोलनेवाले लगभग छः करोड लोग है। इस भाषा का लिखित रूप तथा लिपि अभी बनी है। लोक साहित्य इस में उपलब्ध होता है। इस रूप रचना और भाषा परिवार के साथ संबंध आदि का अध्ययन करना आवश्यक है। यह भारोपीय परिवार से संबंध रखनेवाली भाषा या बोली है। बंजारा भारोपीय परिवार की प्राचीन बोली मानी जा सकती है। इस की लिपि और लिखित साहित्य उपलब्ध न होने का एक कारण ये लोग समूहों में टांडा जीवन जीते हैं। एक जगह से दूसरी जगह पर यात्रा करनेवाले हैं। नागरी भाषा समाज

से दूर रहनेवाले हैं। ये लोग व्यवसाय, व्यापार करनेवाले, हाथ से बनाये जानेवाली चीजों के व्यापार पर जीते हैं। देश विदेशों में घूमते कई सदियों तक अपने भूभाग दूर अपने लोगों से अलग रहनेवाले हैं। इसलिए इन की भाषाओं पर स्थानीय भाषाओं एवं बोलियों का प्रभाव भी देखा जाता है। बंजारा लोग आपस में अपनी मातृभाषा बंजारा में ही बोलते हैं। इसी वजह से उन की भाषा आज भी सुरक्षित है। उसी में वे लोक साहित्य गाते हैं। दूसरों लोगों के साथ भी बंजारा लोग अपनी भाषा में बोलने की कोशिश करते हैं। खासकर स्त्रियाँ, पुरुष काम करते समय दूसरे लोगों से बंजारा में बोलने की कोशिश करते हैं। इन प्रयत्नों के कारण ही स्थानीय शब्दों का प्रयोग बंजारा में होने लगा है। कई तेलुगु, कन्नड, तमिल के शब्द बंजारा भाषा में आज शामिल है। हाट आदि व्यापारिक कामों के लिए बंजारा लोग अपनी भाषा का ही प्रयोग करते हैं। दूसरे समाज के साथ कम संबंध के कारण उन की भाषा विकास नहीं हो पाया। अपनी जाति की सुरक्षा हुई। किंतु उन में अपनी भाषा के विकास करने की प्रवृत्ति भी हो चली है। अपनी भाषा के लिए लिपि और लिखित साहित्य का निर्माण आदि में उन की रुचि बढ रही है। अपनी भाषा के द्वारा अपनी पहचान की कामना भी इन में है। बंजारा भाषा को सार्वजनिक रूप में बोलना भी वे पसंद करते हैं। शिक्षित लोग आज बंजारा भाषा को बोलते देखा जाता है। उन्हें अपनी भाषा को बोलने में कोई संकोच नहीं है। दूसरों के द्वारा अपनी भाषा को अपनाने की

कामना भी उन में है। पहले इस प्रकार काम करने में वे घबराते थे।

बंजारा भाषा विकास के लिए देवनागरी लिपि में पाठ्य पुस्तकों को तैयार करना चाहिए। बंजारा भाषा के लिए देवनागरी लिपि ही अनुकूल है। उस भाषा की ध्वनियों को देवनागरी के अक्षरों के द्वारा सुरक्षित किया जा सकता है। लिपि निर्मित होने के बाद इस भाषा के विकास में अनेक संभावनाएँ हो सकती है। छः करोड लोगों में कई लेखक बनने की पूरी संभावनाएँ है। लिखित साहित्य भी इस भाषा में मिलने की पूरी संभावनाएँ हैं। साथ बंजारों के जीवन में आशातीत विकास की संभावना बनेगी। यानी बंजारों की भाषा के विकास से बंजारों के जीवन को सुधारने की अधिक संभावनाएँ दिखती हैं। बंजारे घुमक्कड हैं। भाषा परिवर्तन में उनका योगदान अमोघ है। अपनी भाषा के माध्यम से वे भारत को एक सूत्र में फिरोने का अद्भुत काम कर सकते हैं। बंजारों के जीवन के सुधरने से उन की संख्या भी बढती जाएगी। जिससे भाषा के विकास में भी बल पडेगा।

उपसंहार :

बजारा भाषा में भी आज कल अंग्रेजी शब्द भी आने लगे हैं। साथ ही बंजारा शब्द भी अंग्रेजी में जाने लगे हैं। पंडित जवहर लाल नेहरू ने उचित ही कहा था भारत की ऐसी कई भाषाएँ है जिन का विकास होना चाहिए। तभी भारत का विकास संतुलित

रूप में हो सकता है। किसी भी जाती जमाती का पंथ, धर्म संप्रदाय सण,त्योहार रीति रिवाज सामाजिक, सांस्कृतिक, पारिवारिक, संस्कार-सभ्यता और संस्कृति समझने-पहचानने के लिए उन की भाषा एक मात्र कुंजी है। यानी एक भाषा के द्वारा एक जाती एक समाज, एक संस्कृति की पहचान होती है। उसी के द्वारा ही उन का विकास होता है। बंजारों की भाषा के द्वारा ही बंजारों की स्वतंत्र पहचान संभव है। उन का विकास भी इसी पहचान से ही संभव है। भाषा में अधिक से अधिक ताकत होती है। जो मनुष्य की धडकनें उन की संवेदनाओं को जीवन संदर्भों और ज्ञान को व्यक्त करने केलिए भी भाषा ही मूलाधार है। इसलिए उस का विकास करना सर्वप्रथम करना चाहिए। शासन वर्ग में शामिल होने के लिए भी मूलाधार भाषा ही है। सांस्कृतिक विकास के लिए अपनी भाषा का होना आवश्यक है। अपनी संस्कृति के फैलाव के लिए भी अपनी भाषा की उन्नति की आवश्यकता है। बिना भाषा के किसी भी सत्ता का लंबे समय तक आसन पर रहना असंभव है। ऐसे में बंजारा भाषा का विकास करना अत्यंत आवश्यक है।

ए. बाबू,
प्राध्यापक, हिंदी विभाग,
वी.आर.महाविद्यालय,
नेल्लूर. आंध्र प्रदेश